

जुग जुग जीए तेरी बेटिड़ी सुनैना राणी ।

मैथिलि देवी तेरे घर प्रघटी वेदवती वेद वखाणी ।

अचलु सुहाग भाग जस भाजनि सुखद श्री सीय महादानी ।

जेंहि पद कमल सेवि मन वच क्रम उमा रमा बृह्माणी ।

मुखिड़ो दिखाइ श्री जानिकि स्वामिनि को नृमल नवल निमाणी ।

श्री मिथिलापुर नारि निहोरत वचन कहत अमृत भर वाणी ।

विदेह कैवल्य विज्ञान धाम वारे जीवन मुक्त पद सानी ।

धरतमत देख रिषीश्वर लाजे श्री रघुवीर दृष्टि ललचानी ।

जनवान कुरिबान श्री जानिकि चंद्र जानी गरीबि श्रीखण्डि सुखदानी ।